संस्कृत स्नातक सेमेस्टर IV, MJC-V, Unit-5 छन्द

छन्द

भूमिका - वेद के छह अङ्ग हैं जिन्हें 'षडङ्ग' के नाम से सामान्यतया अभिहित किया जाता है। ये हैं-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं नेत्रं निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणन्तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

इसके अनुसार छन्द को वेद का पैर माना गया है। छन्दशास्त्र के बिना वेद पङ्गु हैं। छन्दशास्त्र के आदि आचार्य पिङ्गल मुनि को माना जाता है। पिङ्गल मुनि के बाद के ग्रन्थों में वृत्तरत्नाकर प्रमुख है जिसके रचयिता केदार भट्ट हैं। गङ्गादास कृत छन्दोमञ्जरी भी प्रसिद्ध ग्रन्थ है। वृत्तरत्नाकर की प्रसिद्धि अधिक है क्योंकि इसमें छन्द का लक्षण उसी छन्द में दिया गया है और बहुत कम इसमें श्लोक हैं। नोट्स वृत्तरत्नाकर के आधार पर लिखा गया है।

मात्रा और वर्ण भेद से छन्द दो प्रकार के होते हैं। इन्हें मात्रिक और वार्णिक छन्द कहते हैं। जिस प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड विष्णु से व्याप्त है उसी प्रकार गुरु, लघु तथा मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण और नगण इन आठ गणरूप दश अक्षरों से सारा शब्दजाल व्याप्त है -

म्यरस्तजभ्नगैर्लान्तैरेभिर्दशभिरक्षरैः।
समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना॥
वृत्तरत्नाकर 1/6

मगण आदि आठ गण लघु और गुरु वर्णों के विशेष क्रम से बनते हैं। वृत्तरत्नाकर के सातवें श्लोक में इसे स्पष्ट किया

गया है - सर्वगुर्मो मुखान्तलौ यरावन्तगलौ सतौ।
ग्मध्याद्यौ ज्भौ त्रिलो नोऽष्टौ भवन्त्यत्र गणास्त्रिकाः॥

मगणः	यगणः	रगणः	सगणः	तगणः	जगणः	भगणः	नगणः
SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
सर्वगुरुः	आदिलघुः	मध्यलघुः	अन्तगुरुः	अन्तलघुः	मध्यगुरुः	आदिगुरुः	सर्वलघुः

छन्दशास्त्र में तीन वर्णों के समूह को गुरु कहते हैं। लघु वर्ण का सङ्केत खड़ी पाई (।) है और गुरु वर्ण का सङ्केत (S) है।

गुरु और लघु का निर्धारक यह श्लोक है-

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः।
वा पदान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजुः॥ १॥

वृत्तरत्नाकर के इस श्लोक में केदार भट्ट लिखते हैं कि अनुस्वारयुक्त, विसर्ग जिसके अन्त में हो वह और दीर्घ अक्षर गुरु होता है। संयोग से पूर्व का लघुवर्ण भी गुरु होता है। पाद के अन्त का लघु विकल्प से (लघु से प्रयोजन हो तो लघु और गुरु से प्रयोजन हो तो गुरु) गुरु समझना चाहिए। गुरु का चिह्न 'S' इस प्रकार टेढ़ा है। इससे भिन्न वर्ण लघु जानना चाहिए।

चरण के प्रारम्भ में विद्यमान संयोग (दो व्यञ्जनों का स्वर के व्यवधानरहित होकर समीप रहना) को छन्दशास्त्र में क्रम संज्ञा होती है। उस क्रम संयोग के आगे रहते हुए उससे पूर्व लघु की जो पूर्व नियमानुसार गुरु संज्ञा हो जाती है उस गुरु को भी आवश्यकतानुसार कहीं कहीं लघु समझना चाहिए।